ज्ञान, शान्ति, मैत्री

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (भारत)

(संसद द्वारा पारित अधिनियम के अन्तर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha (INDIA)

(A Central University established by an Act of Parliament)

विवरणिका

2008–09

Prospectus
2008-09

महात्मा गांधी अन्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

पोस्ट बॉक्स सं. 16, पंचटीला, वर्धा–422001 (भारत)

फोन : (07152) 251661, फैक्स : (07152) 230903

ई–मेल : hindiuni_wda@sancharnet.in, info@hindivishwa.org

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

अनुक्रम

कुलपति का सन्देश	3–4
विश्वविद्यालय का परिचय	5
नियमित पाठ्यक्रम	6–16
प्रवेश सम्बन्धी सूचना व प्रवेश–नियम	16–18
विद्यार्थियों को दी जाने वाली सुविधाएँ	19
प्रवेश–शुल्क	20–21
दूर शिक्षा कार्यक्रम	23–25
प्रकाशित पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की सूची	26–27

प्रो. जी. गोपीनाथन

कुलपति का सन्देश

भारत इक्कीसवीं शताब्दी के नये परिवेश में विकास की नयी दिशाओं की ओर अग्रसर हो रहा है। भारत की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी इसके बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से आज विश्व में दूसरे स्थान पर आ गयी है। भारत तथा उसके पड़ोसी देशों, जैसे–नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश व अफगानिस्तान आदि के बीच हिन्दी एक सम्पर्क भाषा की भूमिका निभा रही है। दुनिया में मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद आदि भारतवंशी–बहुल देश हैं, जहाँ लगभग चालीस प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। दुनिया के करीब 120 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। लगभग पचास ऐसे देश हैं, जहाँ पर भारतवंशी लोग हिन्दी को व्यापार, सम्प्रेषण, सांस्कृतिक कार्यकलाप आदि के लिए प्रयोग कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी एवं सांस्कृतिक सम्प्रेषण में हिन्दी दुनिया की उपनिवेशवादी भाषाओं के एक विकल्प के रूप में तेजी से उभर रही है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को स्थान देने के विषय में गम्भीर चर्चाएँ हो रही हैं। एक तरह से हिन्दी भारतीयों की अस्मिता की प्रतीक बनती जा रही है।

ऐसे परिदृश्य में महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की प्रासंगिकता पर विचार करना चाहिए। यद्यपि इसकी स्थापना बीसवीं शताब्दी के अन्त में सन 1997 में हुई, परन्तु इसके शैक्षणिक कार्यक्रम 2000 से शुरू हुए। हिन्दी के वर्तमान उच्चशिक्षा पाठ्यक्रमों से किंचित् भिन्न अन्तरानुशासनिक भाषा–अध्ययन इस विश्वविद्यालय की मुख्य विशेषता है। अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी का विकास एवं प्रचार–प्रसार इस विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य माना गया है। केवल भाषिक रूप में ही नहीं, अपितु उससे जुड़े हुए समाज, संस्कृति, कला, लोक परम्परा और प्रौद्योगिकी का अध्ययन भी अत्यन्त ही संगत

है। इसी दृष्टि से महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के वर्तमान पाठ्यक्रमों को परम्परागत पाठ्यक्रमों से भिन्न कुछ नया–सा रूप दिया गया है।

अधिनियम के अनुसार इस विश्वविद्यालय की परिकल्पना चार विद्यापीठों में की गयी है। वे हैं–भाषा, साहित्य, अनुवाद एवं निर्वचन तथा संस्कृति विद्यापीठ। इसके अलावा विश्वविद्यालय में भाषा विद्यापीठ के अन्तर्गत प्रौद्योगिकी अध्ययन केन्द्र व संस्कृति विद्यापीठ के अर्न्तगत प्रबन्धन अध्ययन केन्द्र स्थापित करने का प्रस्ताव विद्यापरिषद् द्वारा स्वीकृत है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कम्प्यूटर का 'लीला' (Laboratory in Informatics for the Liberal Arts) केन्द्र है, जिसमें विद्यार्थी संगणक के कुछ बुनियादी पाठ्यक्रमों को अनिवार्य रूप से पढ़ते हैं।

भाषा विद्यापीठ के अन्तर्गत एम.ए. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी) एवं एम.फिल. पाठ्यक्रम चल रहे हैं, जिनमें हिन्दी भाषा के अध्ययन को कम्प्यूटर सूचना प्रौद्योगिकी, यन्त्रानुवाद तथा यन्त्र भाषा–विज्ञान के नये प्रायोगिक क्षेत्रों से जोड़ने का प्रयास है। विदेशियों के लिए विश्व भाषा हिन्दी में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम, 6 माह का नवीकरण पाठ्यक्रम कुशलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं।

साहित्य विद्यापीठ के अन्तर्गत तुलनात्मक साहित्य–अध्ययन के सिद्धान्तों को लेकर–विश्व साहित्य एवं भारतीय साहित्य के आलोक में हिन्दी साहित्य का अध्ययन हो रहा है। इस विद्यापीठ में एम.ए. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य) और एम.फिल. पाठ्यक्रम चल रहे है। इन पाठ्यक्रमों के द्वारा साहित्य के अध्ययन की वर्तमान प्रणाली को एक नई दिशा मिलेगी और इसके माध्यम से हिन्दी साहित्य को विश्व साहित्य एवं अन्य भारतीय साहित्य से जोड़ा जा सकेगा।

अनुवाद विद्यापीठ में एम.ए. हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी) का पाठ्यक्रम चल रहा है, जिसमें अनुवाद की तकनीक, कम्प्यूटर अनुवाद एवं अनुवाद प्रौद्योगिकी की नयी दिशाओं का अध्ययन किया जाता है। हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी) में एम.फिल. पाठ्यक्रम भी चल रहा है, जिससे अनुसन्धान की दिशा प्रशस्त होगी।

संस्कृति विद्यापीठ इस विश्वविद्यालय का सबसे बड़ा विद्यापीठ होगा। महात्मा बुद्ध, महावीर जैन, महात्मा गांधी, फ्यूजी गुरूजी आदि के सिद्धान्तों से प्रेरित 'अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन' एक विशिष्ट स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है। 'अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन' में एम.फिल. पाठ्यक्रम भी चल रहा है। इसके अलावा स्त्री अध्ययन में एम.ए. और एम. फिल. के पाठ्यक्रम है, जिनमें समाजशास्त्र, नारी लेखन, अर्थतन्त्र, सामाजिक न्याय आदि से जोड़कर भारत में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन किया जा रहा है। जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण पर एक नया स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू किया गया है, जिसमें हिन्दी के सन्दर्भ में जनसंचार की नवीनतम प्रवृतियों का अध्ययन होता है।

हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी), हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य), अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन, स्त्री अध्ययन तथा हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी) विषयों में पीएच.डी. पाठ्यक्रम चल रहे हैं।

विश्व भाषा हिन्दी आज विश्व की अन्य प्रमुख भाषाओं जैसे–चीनी, स्पेनिश, जापानी एवं फ्रेंच के समान ही व्यवसाय, वाणिज्य, पर्यटन आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भाषा बन गयी है। इस कारण से इन भाषाओं के साथ हिन्दी में अनुवाद एवं निर्वचन, प्रशिक्षित लोगों की आगे चलकर बहुत माँग हो सकती है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलने पर इस तरह के अनुवादकों एवं दुभाषियों की आवश्यकता होगी। इस तथ्य को दृष्टि में रखकर 2007–08 से चार द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम हिन्दी–चीनी, हिन्दी–स्पेनिश, हिन्दी–जापानी एवं हिन्दी–फ्रेंच अनुवाद एवं निर्वचन विषय पर शुरू किया गया है। आशा है कि हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए ये पाठ्यक्रम बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे।

2008–09 से एम.ए. दलित एवं जनजाति अध्ययन, एम.ए. लोकनाटक एवं लोकसंगीत, एम.ए. भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन तथा एम.बी.ए. (हिन्दी–माध्यम), ये स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू हो रहे हैं। आशा है इन सब नये पाठ्यक्रमों का सब कहीं स्वागत होगा।

कम्प्यूटर पाठ्यक्रम सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। जिससे सभी भाषापरक एवं मानविकी अध्ययन को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ा जा सकेगा। हमारे विचार से महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के ये सारे पाठ्यक्रम भूमण्डलीकरण की नयी चुनौतियों को स्वीकार करते हुए हिन्दी को विकल्प के रूप में विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। आशा है इन पाठ्यक्रमों से जुड़कर भारत एवं विश्व के अन्य देशों के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे और हिन्दी को सच्चे अर्थ में विश्व भाषा बनाने का उनका योगदान होगा। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष में दूर शिक्षा के अन्तर्गत भी पाँच पाठ्यक्रम शुरू कर रहे हैं जिससे विश्वविद्यालय सुदूर क्षेत्रों के रहने वालों के पास हिन्दी का पैगाम पहुँचा सके।

शुभकामनाओं सहित,

(प्रो. जी. गोपीनाथन)

कुलपति

विश्वविद्यालय का परिचय

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना भारत की संसद द्वारा 1996 ई. में पारित अधिनियम के अन्तर्गत 1997 ई. में केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में की गयी थी। देश का यह पहला अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कर्मभूमि सेवाग्राम (वर्धा) से 06 कि.मी. दूर मुम्बई–नागपुर हाइवे पर उमरी गाँव के निकट पंचटीला पर अवस्थित है। निर्माणाधीन विश्वविद्यालय का क्षेत्रफल **लगभग 212 एकड़** है।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना सुदीर्घ प्रयत्नों का सुफल है। हिन्दी भाषा और साहित्य की उत्तरोत्तर उन्नति के साथ ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में अध्ययन, अनुसन्धान और प्रशिक्षण के समर्थ माध्यम के रूप में हिन्दी का सम्यक् विकास इसका प्रधान लक्ष्य है। देश–दुनिया की भाषाओं के साथ हिन्दी के तुलनात्मक अध्ययन तथा उनसे अधुनातन अनुशासनों की अद्यतन ज्ञान–सामग्री का हिन्दी में अनुवाद और विकास भी विश्वविद्यालय की वरीय प्राथमिकता है। वर्तमान बहु भाषा–भाषी विश्व में एक समर्थ–सम्पन्न अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी की पहचान विश्वविद्यालय की अन्तिम प्रतिश्रुति है।

इस विश्वविद्यालय में आवासीय परिसर के साथ साइबर परिसर की सह–परिकल्पना की गयी है। इसके लिए आधुनिकतम तकनीकी उपादानों को संयोजित किया गया है। साइबर परिसर को विश्वविद्यालय की वेब साइट (website) के माध्यम से क्रियात्मक बनाया जा रहा है। पारम्परिक पुस्तकालय के साथ डिजिटल पुस्तकालय का विकास भी विश्वविद्यालय की योजना का अंग है। मौलिक और मानक–ग्रन्थों का प्रकाशन, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, चित्रों, दस्तावेजों आदि का संग्रह, विश्वकोशों और सन्दर्भ–कोशों का निर्माण आदि विश्वविद्यालय की अनूठी योजनाएँ हैं।

विद्यापीठ

अधिनियम के अनुसार विश्वविद्यालय के निम्नलिखित अध्ययन–विद्यापीठ हैं :–

(1) भाषा विद्यापीठ

- (क) भाषा प्रौद्योगिकी विभाग
- (ख) कम्प्यूटेशनल भाषा विज्ञान विभाग
- (ग) प्रौद्योगिकी अध्ययन केन्द्र
- (घ) भारतीय एवं विदेशी भाषा प्रगत अध्ययन केन्द्र

(2) साहित्य विद्यापीठ

- (क) साहित्य विभाग

(3) अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

- (क) अनुवाद प्रौद्योगिकी विभाग
- (ख) विदेशी भाषा अनुवाद एवं निर्वचन केन्द्र

(4) संस्कृति विद्यापीठ (इसके अन्तर्गत निम्नलिखित विभागों/ केन्द्रों/ की स्थापना की गयी है)

- (क) अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन विभाग
- (ख) स्त्री अध्ययन विभाग
- (ग) जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण विभाग
- (घ) लोक नाट्य एवं लोक संगीत विभाग
- (च) भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन विभाग
- (छ) प्रबन्धन अध्ययन विभाग
- (ज) बाबा साहेब अम्बेडकर दलित एवं आदिवासी अध्ययन केन्द्र
- (झ) महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी शान्ति अध्ययन केन्द्र

लीला (LILA)

'लीला' (Laboratory in Informatics for the Liberal Arts) महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्थापित सूचना–प्रौद्योगिकी का एक केन्द्र है।
इक्कीसवीं सदी के विश्वव्यवस्था में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की केन्द्रीय उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगाढ़ व्यावहारिक परिचय को अनिवार्य पाठ्यचर्या के रूप में अपने पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखा है।

विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों में कम्प्यूटर–आधारित पाठ्यचर्याओं का निर्धारण एवं शिक्षण, कम्प्यूटर–मूलक स्वतन्त्र पाठ्यक्रमों को चलाना, 'लीला' की जिम्मेदारियाँ हैं। संक्षेप में, विश्वविद्यालय की कम्प्यूटर–प्रस्तुति की सूत्रधारिता 'लीला' का कार्य है।
'लीला' ने अपनी योजनाओं में कम्प्यूटर भविष्य के दर्शन को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय की वेबसाइट से लेकर पाठ्यचर्या निर्माण तक की अपनी गतिविधियों को अद्यतन सॉफ्टवेयर पर आधारित किया है।

पाठ्यक्रम

भाषा विद्यापीठ

आज हिन्दी भाषा को एक नवीन दृष्टि व दिशा देना परमावश्यक है, चाहे वह मशीनी दृष्टिकोण हो अथवा प्रौद्योगिकी, इनसे जुड़े बिना हिन्दी का समुचित विकास तथा संवर्द्धन सम्भव नहीं हो सकता। इसी विचार को केन्द्र में रखते हुए भाषा विद्यापीठ के अन्तर्गत भाषा प्रौद्योगिकी विभाग में एम. ए. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी) एम.फिल. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी) व पीएच.डी. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी) पाठ्यक्रम चल रहे हैं।

एम.ए. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी)

इस पाठ्यक्रम की अवधारणा का मूलाधार यह वास्तविकता है कि वैश्वीकरण के इस युग में, विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा हिन्दी को संगणक और प्रौद्योगिकी से जोड़े बगैर हिन्दी का समुचित विकास और संवर्धन नहीं हो सकता। यह एक नियमित पाठ्यक्रम है जिसके अन्तर्गत हिन्दी भाषा के प्रायः सभी पक्षों को समाहित करने हेतु भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के उपांगों–अनुवाद, कोशविज्ञान, शैलीविज्ञान, भाषा शिक्षण आदि को भी प्रौद्योगिकी के साथ रखा गया है। यह पाठ्यक्रम अपने आप में इसलिए भी विशिष्ट है कि इसमें संरचनात्मक भाषा विज्ञान के साथ–साथ परम्परागत भारतीय चिन्तन को भी रखा गया है। हिन्दी भाषा का विकास क्रम, उसकी विविध बोलियों एवं क्षेत्रीय रूपों के साथ ही हिन्दी की संरचना (ध्वनिपरक, शब्दपरक, पद तथा पदबन्धपरक, वाक्यपरक एवं प्रोक्तिपरक) और हिन्दी भाषा के समाजशास्त्र के अध्ययन को भी इस पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है। हिन्दी भाषा के कम्प्यूटरीकरण, पाठ–संसाधन, मशीनी अनुवाद, कम्प्यूटरीकृत कोशविज्ञान आदि प्रौद्योगिकीपरक घटक भी इस पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण अंग हैं। यह दो वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम है जो चार छमाहियों में पूरा होता है। चार छमाहियों का यह पाठ्यक्रम 64 क्रेडिट का है। इसके साथ ही कम्प्यूटर का अध्ययन अनिवार्य है जो प्रत्येक छमाही में दो क्रेडिट का है।

योग्यता:–

किसी भी अनुशासन में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक (10+2+3 पाठ्यक्रम) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

एम.फिल. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी)

भाषा को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ते हुए अन्य प्रौद्योगिकी एवं गैर–प्रौद्योगिकी संस्थाओं की माँग को देखते हुए इस विषय पर गम्भीर अध्ययन व शोध के साथ–साथ विषय के प्रति प्रतिबद्धता पैदा करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम एक वर्ष का होगा। पहली छमाही में नियमित कक्षाएँ होंगी व दूसरी छमाही में विद्यार्थी अपना लघु शोध–प्रबन्ध पूरा करेंगे। कुल 22 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में 12 क्रेडिट के तीन प्रश्न पत्र होंगे और 8 क्रेडिट का लघु शोध–प्रबन्ध और 2 क्रेडिट की मौखिक परीक्षा होगी।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

पीएच.डी. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी)

हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी) के अन्तर्गत सत्र 2006–07 से पीएच.डी. पाठ्यक्रम चल रहा है।

योग्यता:–

(क) सम्बद्ध अनुशासन में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

(ख) किसी भी अनुशासन में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर एवं भाषा प्रौद्योगिकी अथवा अनुवाद प्रौद्योगिकी में एम. फिल. परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

वांछनीय:–

सम्बद्ध अनुशासन में एम.फिल./जे.आर.एफ./नेट/अन्य राष्ट्रीय स्तर परीक्षा।

सम्बद्ध अनुशासन:–

एम.ए.भाषा/भाषा विज्ञान/अप्रयुक्त भाषा विज्ञान/भाषा प्रौद्योगिकी/अनुवाद प्रौद्योगिकी/एम.सी.ए./एम. टैक (भाषा प्रौद्योगिकी)/एम.एस.सी. (कम्प्यूटर साइंस)/एम. एस.सी. (आई.टी.)/एम.बी.ए. (आई.टी.)/एम.बी.ए. (सिस्टम्स)।

साहित्य विद्यापीठ

विश्वविद्यालय अधिनियम के अन्तर्गत मान्य चार विद्यापीठों में से साहित्य विद्यापीठ एक प्रमुख विद्यापीठ है। हिन्दी साहित्य का भारतीय तथा विश्व भाषाओं के साहित्य के साथ संवाद और तुलनात्मक अध्ययन एवं शोध इस विद्यापीठ का प्रधान लक्ष्य है।

विद्यापीठ की मूल संकल्पना देश दुनिया के भाषायी एवं साहित्यिक वैविध्य के पीछे सक्रिय समान मानवीय मस्तिष्क और उसकी सृजनशीलता में साम्य की धारणा पर अवलम्बित है। भाषा और साहित्य अनेक और बहुबिध हैं, किन्तु उनका सर्जक मानस और आस्वादक चित्त, अपने संस्कारों के भेद के बावजूद, बुनियादी प्रकृति में एक–सा है। इस कारण विभिन्न भाषाओं के साहित्य के बीच संवाद की अपार सम्भावनाएँ हैं। इन सम्भावनाओं का सन्धान और शोध विद्यापीठ की वरीय प्राथमिकता है। इससे अकादमिक उद्देश्यों के साथ–साथ राष्ट्रीय भावात्मक एकता तथा मानवीय सह–भाव भी सम्पुष्ट होता है।

साहित्य समावेशी (सर्वाश्लेषी) विद्या है। ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों और कलाओं के साथ उसका घनिष्ठ एवं प्रगाढ़ सम्बन्ध परम्परा से ही सर्वविदित है। इधर विकसित नयी प्रौद्योगिकी और तज्जनित विभिन्न माध्यमों से भी साहित्य का अपरिहार्य सम्बन्ध विकसित हुआ है। इस दृष्टि से अन्तरानुशासनिक अध्ययन एवं शोध भी साहित्य विद्यापीठ की प्रतिश्रुति है।

फिलहाल, साहित्य विद्यापीठ के अन्तर्गत साहित्य विभाग में हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य) के एम.ए., एम. फिल. एवं पी–एच.डी. पाठ्यक्रम संचालित हैं। विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का बी.ए. पाठ्यक्रम स्वीकृत है तथा ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में भारतीय साहित्य में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रस्तावित है। यथासमय अन्य पाठ्यक्रम प्रस्तावित होंगे।

एम.ए. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)

एम.ए. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य) दो वर्षीय पाठ्यत्त्म है जो चार छमाहियों में पूरा होता है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन प्रविधि के साथ हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के साहित्य एवं विश्व साहित्य का अध्ययन शामिल है। चार छमाहियों का यह नियमित पाठ्यक्रम 64 क्रेडिट का है। इसके साथ ही कम्प्यूटर का अध्ययन अनिवार्य है जो प्रत्येक छमाही में 2 क्रेडिट का है। इस प्रकार सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के लिए 72 क्रेडिट निर्धारित हैं। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु कुल 20 सीटें हैं।

योग्यता:–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

एम.फिल. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)

एम.फिल. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य) एक वर्ष का पाठ्यक्रम है जो दो छमाहियों में पूरा होता। पहली छमाही में तीन प्रश्नपत्र होंगे। दूसरी छमाही में एक लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना होगा और एक मौखिक परीक्षा ली जाएगी। कुल 22 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में 12 क्रेडिट के तीन प्रश्नपत्र होंगे तथा 8 क्रेडिट का लघु शोध–प्रबन्ध और 2 क्रेडिट की मौखिक परीक्षा होगी। इस पाठ्यक्रम में कुल 10 सीटें हैं।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

सम्बद्ध अनुशासन :

हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)/हिन्दी अथवा अन्य कोई साहित्य/संगीत/ललित कलाएँ/नाटक/तुलनात्मक साहित्य/मानविकी के अन्तर्गत अन्य विषय (समाज विज्ञानों को छोड़कर)

पीएच.डी. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)

हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य) के अन्तर्गत सत्र 2006–07 से पीएच.डी. पाठ्यक्रम चल रहा है। पाठ्यक्रम की अवधि न्यूनतम 02 और अधिकतम 05 वर्ष है। सीटों की संख्या शोध निर्देशकों और रिक्त स्थानों के आधार पर घट–बढ़ सकती है।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

वांछनीय:–

सम्बद्ध अनुशासन में एम.फिल./जे.आर.एफ./नेट/स्लेट (जून 2002 से पहले) या यू.जी.सी. द्वारा मान्य अन्य राष्ट्रीय परीक्षा।

सम्बद्ध अनुशासन:–

हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)/हिन्दी अथवा अन्य कोई साहित्य/संगीत/ललित कलाएँ/नाटक /तुलनात्मक साहित्य/मानविकी के अन्तर्गत अन्य विषय (समाज विज्ञानों को छोड़कर)

संस्कृति विद्यापीठ

इस विद्यापीठ के अन्तर्गत ज्ञान के प्रचलित अनुशासनों यथा–मानविकी व समाज विज्ञान से जुड़े अन्तर–अनुशासनात्मक विषय के रूप में निम्नलिखित पाठ्यक्रम चल रहे हैं:–

(1) एम.ए. अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन
(2) एम.फिल. अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन
(3) पीएच.डी. अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन
(4) एम.ए. स्त्री अध्ययन
(5) एम. फिल. स्त्री अध्ययन
(6) पीएच.डी. स्त्री अध्ययन
(7) एम.ए. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण

इसके अलावा निम्न पाठ्यक्रम सत्र 2008 से प्रारम्भ किये जा रहे हैं:–

(1) एम.ए. दलित एवं जनजाति अध्ययन
(2) एम.ए. लोकनाटक एवं लोक संगीत
(3) एम.ए. भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन
(4) एम.बी.ए. (हिन्दी माध्यम)

अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन, स्त्री अध्ययन के अन्तर्गत पीएच.डी. पाठ्यक्रम सत्र 2006–07 से संचालित हैं।

एम.ए. अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन

विश्वविद्यालय में वैश्विक स्तर पर बढ़ती जा रही हिंसात्मक मनोवृत्ति को दृष्टि में रखकर गांधीवादी मूल्यों के संवर्द्धन एवं संरक्षण के उद्देश्य से एम.ए. अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन में दो वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम चार छमाहियों में पूरा होगा जो 64 क्रेडिट का होगा। इसके साथ ही कम्प्यूटर का अध्ययन अनिवार्य है जो प्रत्येक छमाही में 2 क्रेडिट का है।

योग्यता:–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

एम. फिल. अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन

अहिंसा सम्बन्धी मूल्यों एवं सिद्धान्तों के प्रति गम्भीर अध्ययन व शोध के साथ–साथ मानवता के लिए प्रतिबद्धता पैदा करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम एक वर्ष का है। पहली छमाही में नियमित कक्षाएँ होंगी व दूसरी छमाही में विद्यार्थी अपना लघु शोध प्रबन्ध पूरा करेंगे। कुल 22 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में 12 क्रेडिट के तीन प्रश्न पत्र होंगे और 8 क्रेडिट का लघु शोध प्रबन्ध और 2 क्रेडिट की मौखिक परीक्षा होगी।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

पीएच.डी. अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन

अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन के अन्तर्गत सत्र 2006–07 से पीएच.डी. पाठ्यक्रम चल रहा है।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

वांछनीय:–

सम्बद्ध अनुशासन में एम.फिल./जे.आर.एफ./नेट/अन्य राष्ट्रीय परीक्षा।

एम.ए. स्त्री अध्ययन

हिन्दी में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्त्री विमर्श को विस्तार देने की दृष्टि से एम. ए. स्त्री अध्ययन पाठ्यक्रम संचालित है। इसी उद्देश्य से संस्कृति विद्यापीठ के अन्तर्गत वर्तमान में एम.ए. स्त्री अध्ययन का पाठ्यक्रम चल रहा है। 64 क्रेडिट का यह पाठ्यक्रम चार छमाहियों में पूरा होगा। इसके साथ ही कम्प्यूटर का अध्ययन अनिवार्य है जो प्रत्येक छमाही में 2 क्रेडिट का है।

योग्यता:–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

एम.फिल. स्त्री अध्ययन

एम.फिल. स्त्री अध्ययन पाठ्यक्रम एक वर्ष का है जो दो छमाही में पूरा होगा। पहली छमाही में नियमित कक्षाएँ होंगी व दूसरी छमाही में विद्यार्थी लघु शोध प्रबन्ध पूरा करेंगे। कुल 22 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में 12 क्रेडिट के तीन प्रश्न पत्र होंगे तथा 8 क्रेडिट का लघु शोध प्रबन्ध और 2 क्रेडिट की मौखिक परीक्षा होगी।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

पीएच.डी. स्त्री अध्ययन

स्त्री अध्ययन मे अन्तर्गत सत्र 2006–07 से पीएच.डी. पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

वांछनीय:–

सम्बद्ध अनुशासन में एम.फिल./जे.आर.एफ./नेट/अन्य राष्ट्रीय परीक्षा।

एम.ए. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण

भारतीय समाज में संचार माध्यमों एवं सम्प्रेषण के क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग उत्तरोतर बढ़ा है और नयी–नयी जनसंचार प्रौद्योगिकियाँ आ रही हैं जिनमें हिन्दी के प्रयोग और रोजगार की नये प्रकार की सम्भावनाएँ भी उद्‌भूत हो रही हैं।

जनसंचार, सम्प्रेषण और पत्रकारिता का यह पाठ्यक्रम इस दृष्टि से भी विशिष्ट है क्योंकि इसमें सम्प्रेषण–सिद्धान्त, जनसंचार के सिद्धान्त, जनसंचार के सिद्धान्त, संचार शोध, सांस्कृतिक सम्प्रेषण और अन्तरराष्ट्रीय संचार के साथ–साथ मुद्रित और दृश्य–श्रव्य माध्यमों के लिए पत्रकारिता को शामिल किया गया है। कुल 64 क्रेडिट का यह पाठ्यक्रम चार छमाहियों में पूरा किया जाएगा। इसके साथ ही कम्प्यूटर का अध्ययन अनिवार्य होगा जो प्रत्येक छमाही में 2 क्रेडिट का होगा।

योग्यता:–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

पीएच.डी जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण

(यह शोध निर्देशकों की उपलब्धतानुसार शीघ्र ही प्रारम्भ किया जाएगा।)

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

वांछनीय:–

सम्बद्ध अनुशासन में एम.फिल./जे.आर.एफ./नेट/अन्य राष्ट्रीय परीक्षा।

एम.ए. दलित एवं जनजाति अध्ययन

योग्यता:–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

एम.ए. लोक नाट्क–लोक संगीत

योग्यता:–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। तथा लोक नाटय एवं लोक संगीत–नृत्य में अनुभव। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

एम.ए. भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन

योग्यता:–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

वांछनीय:–

इतिहास, कला, पर्यटन में अकादमिक योग्यता।

एम.बी.ए.

योग्यताः–

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण तथा प्रबन्धन, अर्थशास्त्र, वाणिज्य शास्त्र आदि में अकादमिक योग्यता। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*

वांछनीयः–

प्रबन्धन, अर्थशास्त्र या वाणिज्य शास्त्र में अकादमिक योग्यता।

अनुवाद एवं निर्वचन–विद्यापीठ

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अन्तर्गत निम्नलिखित पाठ्यक्रम संचालित हैं।

1. एम.ए. हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)
2. एम.फिल. हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)
3. पीएच.डी. हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)
4. विदेशी भाषा में दो वर्षीय अनुवाद एवं निर्वचन डिप्लोमा

इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य है:–

1. विभिन्न ज्ञान अनुशासनों में अनुवाद प्रक्रिया का विकास करना।
2. हिन्दी से विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में यंत्रानुवाद की प्रक्रिया का विकास करना।
3. निर्वचन को एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में विकसित करना और इस दिशा में अनुसन्धान करना।
4. विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में हिन्दी दुभाषिये तैयार करना।
5. अनुवाद को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को विकसित करना।
6. भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी को अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न भाषा बनाना।
7. अनुवाद अनुशासन को विदेशी और द्वितीय भाषा शिक्षण में एक प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित करना।
8. प्रतीकान्तरण (Inter Semiotic Translation) का फिल्म, दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं रंगमंच आदि में विकास करना।

एम.ए. हिन्दी अनुवाद प्रौद्योगिकी

एम.ए. हिन्दी अनुवाद प्रौद्योगिकी का दो वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम चार छमाहियों का है जिसमें कुल 64 क्रेडिट होंगे। इसके साथ ही कम्प्यूटर का अध्ययन अनिवार्य है जो प्रत्येक छमाही में 2 क्रेडिट का है तथा एक विदेशी भाषा का अध्ययन भी आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में कुल 20 सीटें हैं।

योग्यता:–

1. किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3) परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 45 प्रतिशत)*
2. हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा के साथ स्नातक उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को वरीयता दी जायेगी।

एम.फिल. हिन्दी अनुवाद प्रौद्योगिकी

एम.फिल. हिन्दी अनुवाद प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम एक वर्ष का है। पहली छमाही में नियमित अध्ययन होगा और दूसरी छमाही में विद्यार्थी अपना लघु शोध प्रबन्ध पूरा करेंगे।

कुल 22 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में 12 क्रेडिट के तीन प्रश्न पत्र होंगे और 8 क्रेडिट का लघु शोध प्रबन्ध होगा तथा 2 क्रेडिट की मौखिक परीक्षा होगी। इस पाठ्यक्रम में कुल 10 सीटें हैं।

योग्यता:–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

पीएच.डी. हिन्दी अनुवाद प्रौद्योगिकी

अनुवाद प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत सत्र 2006–07 से पीएच.डी. पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।

योग्यता–

सम्बद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। *(अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)*

वांछनीय:–

सम्बद्ध अनुशासन में एम.फिल./जे.आर.एफ./नेट/स्लेट (जून 2002 के पूर्व)/ यू.जी.सी. द्वारा मान्य अन्य राष्ट्रीय परीक्षा।

सम्बद्ध अनुशासन–

हिन्दी, अनुवाद प्रौद्योगिकी, भाषा विज्ञान।

विदेशी भाषाओं में दो वर्षीय अनुवाद एवं निर्वचन डिप्लोमा

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ तथा भाषा विद्यापीठ द्वारा संयुक्त रूप से संचालितः–

हिन्दी–चीनी अनुवाद एवं निर्वचन डिप्लोमा

यह चार छमाही का (दो वर्षीय) पाठ्यक्रम है। प्रथम दो छमाही में चीनी–भाषा का अध्ययन होगा। तीसरी एवं चौथी छमाही में हिन्दी–चीनी अनुवाद एवं निर्वचन का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

हिन्दी–स्पेनिश अनुवाद एवं निर्वचन डिप्लोमा

यह चार छमाही का (दो वर्षीय) पाठ्यक्रम है। प्रथम दो छमाही में स्पेनिश–भाषा का अध्ययन होगा। तीसरी एवं चौथी छमाही में हिन्दी–स्पेनिश अनुवाद एवं निर्वचन का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

हिन्दी–फ्रेंच अनुवाद एवं निर्वचन डिप्लोमा

यह चार छमाही का (दो वर्षीय) पाठ्यक्रम है। प्रथम दो छमाही में फ्रेंच–भाषा का अध्ययन होगा। तीसरी एवं चौथी छमाही में हिन्दी–फ्रेंच अनुवाद एवं निर्वचन का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

हिन्दी–जापानी अनुवाद एवं निर्वचन डिप्लोमा

यह चार छमाही का (दो वर्षीय) पाठ्यक्रम है। प्रथम दो छमाही में जापानी–भाषा का अध्ययन होगा। तीसरी एवं चौथी छमाही में हिन्दी–जापानी अनुवाद एवं निर्वचन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। *(अध्यापक के उपलब्धतानुसार शुरू किया जाएगा।)*

योग्यताः– 10+2 पाठ्यक्रम परीक्षा उत्तीर्ण।

संस्कृत भाषा में एक वर्षीय डिप्लोमा

भाषा विद्यापीठ के अन्तर्गत संस्कृत डिप्लोमा पाठ्यक्रम उन लोगों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है जो संस्कृत में रूचि रखते हैं।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य उन विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा व साहित्य की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक आधारभूत जानकारी देना है। पाठ्यक्रम सामग्री में प्राथमिक जानकारी से लेकर सम्भाषण तक को शामिल किया गया है।

योग्यता:–किसी भी विषय में 10+2 परीक्षा उत्तीर्ण

विदेशियों के लिए पाठ्यक्रम

आवश्यकता/सरोकार/उद्देश्य

भारत एक बहुभाषिक देश है जहाँ 1632 मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। हिन्दी यहाँ की मुख्य सम्पर्क भाषा है।

भारत की यात्रा करते हुए विदेशी सम्प्रेषण को लेकर चिन्तित होता है। यदि वह जानता है कि इस बहुभाषी देश में एक सम्पर्क भाषा सम्प्रेषण की समस्या को हल कर सकती है तो वह कम से कम, उस भाषा का कार्यकारी ज्ञान प्राप्त करना चाहता है और यदि वह विदेशी देश की संस्कृति में रूचि रखता है या उसके सम्बन्ध में अध्ययन करना चाहता है तो उसे उस भाषा विशेष का अपेक्षारत गहन अध्ययन करना होगा।

उपर्युक्त व्यावहारिक आवश्यकता ने विश्वविद्यालय को विदेशियों हेतु हिन्दी के प्रयोजनमूलक साहित्यिक और सांस्कृतिक घटकों की जानकारी प्रदान करने के लिए समुचित हिन्दी पाठ्यक्रम आरम्भ करने की प्रेरणा दी है।

विश्वभाषा हिन्दी में डिप्लोमा, भाषा विद्यापीठ के अन्तर्गत (एक वर्ष) 2007–08 से प्रारम्भ किया गया है।। इसके अन्तर्गत मीडिया लेखन, अनुवाद एवं प्रबन्धन में हिन्दी आदि का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

1. विदेशियों के लिए तीन वर्ष का बी.ए. पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति,साहित्य विद्यापीठ के अन्तर्गत।
2. विश्वभाषा हिन्दी में डिप्लोमा, भाषा विद्यापीठ के अन्तर्गत (एक वर्ष)।

प्रवेश सम्बन्धी सूचना

विवरणिका शुल्क (एम.ए./एम.फिल./पीएच.डी.)

1. सामान्य एवं अन्य पिछड़ा–वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए रू 200.00/–नगद
2. अनुसूचित जाति/जनजाति के अभ्यर्थियों के लिए रू 100.00/–नगद
3. विदेशी अभ्यर्थियों के लिए $ 25 डालर

आरक्षण

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रवेश–परीक्षा में उत्तीर्ण अनुसूचित जाति/जनजाति के अभ्यर्थियों को प्रवेश में 22.5 प्रतिशत (अनुसूचित जाति 15 प्रतिशत व अनुसूचित जनजाति 7.5 प्रतिशत) एवं विकलांग अभ्यर्थियों को 03 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। अन्य पिछड़ा–वर्ग के लिए आरक्षण भारत सरकार के नियमों के अधीन ही देय होगा।

छात्रावास

विश्वविद्यालय द्वारा अभ्यर्थियों को छात्रावास की सुविधा प्रदान की जाती है। (उपलब्धता के आधार पर) पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए चयनित अभ्यर्थी जो छात्रावास में रहने के इच्छुक होते हैं, उन्हें पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 15 दिनों के भीतर डीन छात्र कल्याण के समक्ष छात्रावास सम्बन्धी आवेदन–पत्र भरकर एवं आवास प्रमाण–पत्र की सत्यापित प्रति लगाकर प्रस्तुत करना होता है। (आवास प्रमाण–पत्र ग्राम प्रधान/ब्लाक प्रमुख/ तहसीलदार द्वारा सत्यापित हो)

(दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए छात्रावास सुविधा नहीं दी जाएगी।)

माइग्रेशन

प्रत्येक विद्यार्थी को माइग्रेशन सर्टिफिकेट विश्वविद्यालय के अध्यादेश अनुसार प्रवेश के समय अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करना होगा।

प्रवेश–पत्र

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित एम.ए./एम.फिल./पीएच.डी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए निर्धारित अर्हता रखने वाले एवं पूर्णरूप से आवेदन–पत्र भरकर जमा करने वाले अभ्यर्थियों को प्रवेश–पत्र निर्गत किया जाएगा।

अध्ययन सत्र

मानसून सत्र 25 जुलाई 2008 से 20 दिसम्बर 2008 तक
शीत–सत्र 05 जनवरी 2009 से 15 मई 2009 तक

सत्रान्त अवकाश

शीतावकाश 21 दिसम्बर 2008 से 04 जनवरी 2009 तक
ग्रीष्मावकाश 16 मई 2009 से 30 जून 2009 तक

विशेष

चयनित अभ्यर्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश लेते समय अपने सभी शैक्षणिक प्रमाण पत्र/दस्तावेजों की मूलप्रति सत्यापन के लिए उपलब्ध करानी होगी।

प्रवेश नियम

एम.ए./एम.फिल./पीएच.डी. पाठ्यक्रम

1. आवेदन–पत्र के आधार पर आवेदकों को जून माह में निम्नलिखित केन्द्रों:–वर्धा, जयपुर, अहमदाबाद, दिल्ली, भोपाल, लखनऊ, पटना, राँची, कोलकाता, चेन्नै, हैदराबाद, भुवनेश्वर, कोच्ची, मुम्बई, बंगलूरू व गुवाहाटी में एक लिखित परीक्षा के लिए बुलाया जाएगा। तत्पश्चात चयनित अभ्यर्थियों को जुलाई माह में साक्षात्कार के लिए मुख्य परिसर, वर्धा में आमन्त्रित किया जाएगा।
2. प्रवेश–प्रक्रिया दो चरणों में पूरी होगी:–
   - पहले चरण में एक लिखित परीक्षा होगी। इसमें सम्बन्धित विषय की सामान्य जानकारी से सम्बद्ध वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीयप्रश्न होंगे।

   - प्रवेश प्रक्रिया के दूसरे चरण में साक्षात्कार होगा जो मुख्यालय वर्धा में सम्पन्न होगा। साक्षात्कार के लिए उन्हीं अभ्यर्थियों को बुलाया जाएगा जो प्रवेश के लिए आयोजित लिखित परीक्षा में सफल होंगे। साक्षात्कार के लिए चयनित अभ्यर्थियों को एक तरफ का द्वितीय श्रेणी (सामान्य) रेल किराया दिया जाएगा।
3. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार अनुसूचित जाति/जनजाति/पूर्वोत्तर के अभ्यर्थियों को प्रवेश में आरक्षण एवं शुल्क में छूट दी जाएगी।

प्रवेश के समय आवश्यक दस्तावेज

1. प्रवेश के समय अभ्यर्थियों को पासपोर्ट आकार के दो फोटो लाना होगा।
2. शैक्षणिक योग्यता सम्बन्धी सभी अंक–पत्रों की सत्यापित छाया प्रति, प्रमाण पत्र जिसमें जन्मतिथि का उल्लेख हो।
3. चरित्र प्रमाण पत्र (अन्तिम शिक्षण संस्थान से निर्गत)
4. अनुसूचित जाति/जनजाति/अन्य पिछड़ा–वर्ग के अभ्यर्थी द्वारा मजिस्ट्रेट/तहसीलदार द्वारा प्रमाणित जाति प्रमाण–पत्र की प्रति।
5. एम.फिल./पीएच.डी. में प्रवेश के लिए इच्छुक अभ्यर्थियों को आवेदन–पत्र के साथ दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा लिखे हुए अनुशंसा पत्र जमा करने होंगे, जिनमें से एक सम्बन्धित अभ्यर्थी के अध्यापक का होना चाहिए।
6. एम. फिल./पीएच.डी. में प्रवेश के लिए इच्छुक अभ्यर्थियों को आवदेन–पत्र के साथ जिस विषय में वे शोध करना चाहते हैं, उस विषय पर एम.फिल. के लिए 800शब्दों में तथा पीएच.डी. के लिए 1000 शब्दों में एक Synopsis प्रस्तुत करनी होगी। Synopsis का प्रारूप निम्नानुसार होना आवश्यक है:–
    1. शोध विषय
    2. परिकल्पना
    3. उद्देश्य
    4. प्रविधि
    5. रूपरेखा
    6. सन्दर्भ सूची

(क) आवदेन–पत्र सहित विवरणिका प्राप्त करने की तिथि : 31 मार्च 2008 से प्रारम्भ
(ख) आवेदन–पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि : 10 मई 2008 तक
(ग) लिखित परीक्षा की तिथि (एम.ए./एम.फिल./एम.बी.ए.) : 08 जून 2008
(घ) साक्षात्कार की तिथि (एम.ए./एम.फिल./एम.बी.ए.) : 06 जुलाई 2008
(च) पीएच.डी. (लिखित परीक्षा) : 03 अगस्त 2008

(साक्षात्कार की तिथि बाद में सूचित की जाएगी)

उपकुलसचिव (अकादमिक)
महात्मा गांधी अन्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
पोस्ट बॉक्स सं. 16, पंचटीला, वर्धा–422001 (महाराष्ट्र)
फोन : (07152) 251661, फैक्स : (07152) 230903
ई–मेल : hindiuni_wda@sancharnet.in, info@hindivishwa.org
बेबसाइट : www.hindivishwa.org

विद्यार्थियों को दी जाने वाली सुविधाएँ

विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को निम्नलिखित सुविधाएँ प्रदान करता है:–

1. रियायती दर पर छात्रावास की सुविधा। छात्रावास में प्रवेश के समय निर्धारित छात्रावास शुल्क लिया जाएगा।
2. सभी छात्रों की स्वास्थ्य–बीमा योजना के तहत सेवाग्राम मेडिकल कालेज में बीमा–कार्ड की सुविधा। *(निर्धारित समय पर)*
3. छात्रों को शहर से परिसर तक आने और जाने के लिए रियायती शुल्क पर बस की सुविधा।
4. प्रत्येक विद्यार्थी को परिसर में इंटरनेट की सुविधा।
5. विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित मानदण्डों के आधार पर एम.ए. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों को मेधा छात्रवृत्ति दी जाएगी।
6. विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के आधुनिकतम संसाधनों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में एक कम्प्यूटर प्रयोगशाला स्थापित की गयी है। यहाँ न सिर्फ इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है, बल्कि कम्प्यूटर के अनिवार्य–शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को शोध और ज्ञान की अधुनातन प्रविधियों से भी अवगत कराया जाता है।
7. जहाँ एक ओर विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय में न सिर्फ वर्तमान में चल रहे पाठ्यक्रमों को केन्द्रित करते हुए बल्कि भविष्य में करणीय अधुनातन शोध की दिशाओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्रिकाओं का एक व्यवस्थित और विशाल संग्रह किया जा रहा है। सभी विषयों से सम्बन्धित नवीनतम पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह यहाँ उपलब्ध है, वहीं दूसरी ओर हिन्दी की पुरानी छपी दुर्लभ प्रतियों और पाण्डुलिपियों को 'विश्व हिन्दी संग्रहालय' एवं 'अभिलेखागार' में संरक्षित किया जा रहा है।

प्रवेश शुल्क

एम.ए. पाठ्यक्रम

शुल्क

प्रवेश– शुल्क	:	रु.	150.00
छमाही शिक्षण– शुल्क	:	रु.	500.00
सुरक्षा शुल्क (प्रत्यर्पणीय)	:	रु.	250.00
पुस्तकालय/प्रयोगशाला संरक्षण शुल्क	:	रु.	200.00
पुस्तकालय शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	50.00
खेलकूद शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	50.00
परिचय पत्र शुल्क	:	रु.	20.00
सांस्कृतिक कार्यक्रम शुल्क	:	रु.	25.00
इंटरनेट शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	200.00
अकादेमिक/परियोजना भ्रमण	:	रु.	110.00
छात्र संघ शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	90.00
		रु.	**1645.00**

एम.ए. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण पाठ्यक्रम

शुल्क

प्रवेश– शुल्क	:	रु.	150.00
छमाही शिक्षण– शुल्क	:	रु.	800.00
सुरक्षा शुल्क (प्रत्यार्पणीय)	:	रु.	1000.00
पुस्तकालय/प्रयोगशाला संरक्षण शुल्क	:	रु.	500.00
पुस्तकालय शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	50.00
खेलकूद शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	30.00
परिचय–पत्र शुल्क	:	रु.	20.00
साहित्य एवं सांस्कृतिक शुल्क	:	रु.	25.00
इंटरनेट	:	रु.	120.00
अकादेमिक/परियोजना भ्रमण शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	750.00
चिकित्सा पंजीकरण शुल्क	:	रु.	30.00
छात्र संघ शुल्क	:	रु.	90.00
विद्यार्थी सहायता शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	25.00
प्रयोगशाला शुल्क	:	रु.	1000.00
			4590.00

एम.फिल. पाठ्यक्रम
शुल्क

प्रवेश शुल्क	:	रु.	150.00
छमाही शिक्षण शुल्क	:	रु.	500.00
सुरक्षा शुल्क (प्रत्यर्पणीय)	:	रु.	250.00
पुस्तकालय/प्रयोगशाला शुल्क	:	रु.	200.00
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	50.00
खेलकूद शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	125.00
परिचय–पत्र शुल्क	:	रु.	20.00
इंटरनेट एवं प्रयोगशाला शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	200.00
अकादमिक/परियोजना भ्रमण	:	रु.	300.00
छात्र–संघ शुल्क (वार्षिक)	:	रु.	90.00
सांस्कृतिक कार्यक्रम शुल्क	:	रु.	25.00
			रु. 1910.00

एम.बी.ए.
शुल्क

प्रवेश शुल्क	:	रू.	500.00
छमाही शिक्षण शुल्क	:	रू.	5000.00
सुरक्षा शुल्क	:	रू.	2000.00
पुस्तकालय शुल्क	:	रू.	1000.00
पुस्तकालय सुरक्षा शुल्क	:	रू.	1500.00
परीक्षा शुल्क (छमाही)	:	रू.	250.00
खेलकूद शुल्क (प्रति वर्ष)	:	रू.	50.00
इंटरनेट (वार्षिक)	:	रू.	1000.00
छात्र–संघ शुल्क (वार्षिक)	:	रू.	90.00
छात्र कल्याण शुल्क (प्रति वर्ष)	:	रू.	500.00
चिकित्सा शुल्क (प्रति वर्ष)	:	रू.	50.00
परिचय पत्र शुल्क	:	रू.	30.00
अकादमिक/परियोजना भ्रमण शुल्क	:	रू.	1000.00
			रु. 12970.00

पी–एच.डी. पाठ्यक्रम

शुल्क

पंजीकरण शुल्क	:	रु. 300.00	*(केवल प्रवेश के समय)*
कम्प्यूटर शुल्क	:	रु. 1000.00	*(प्रति वर्ष)*
पुस्तकालय शुल्क	:	रु. 300.00	*(प्रति वर्ष)*
प्रतिभूति राशि	:	रु. 1000.00	*(प्रतिदेय)*
परीक्षा शुल्क	:	रु. 1000.00	*(शोध प्रस्तुत करते समय)*

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

शुल्क

द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

(स्पेनिश, फ्रेंच, चाइनीज, जापानी)	:	रू. 750.00	(प्रति छमाही)

एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

(संस्कृत भाषा)	:	रू. 900.00	(वार्षिक)

दूर शिक्षा कार्यक्रम

विश्वविद्यालय के अधिनियम की धारा 4 में उल्लिखित विश्वविद्यालय के उद्देश्यों में बताया गया है कि 'विश्वविद्यालय का उद्देश्य दूर शिक्षा पद्धति के माध्यम से हिन्दी को लोकप्रिय बनाना होगा'। साथ ही धारा 5 के उपबन्ध (5) के अन्तर्गत विश्वविद्यालय को प्रदत्त शक्तियों में यह बताया गया है कि 'दूर शिक्षा के माध्यम से उन व्यक्तियों को सुविधाएँ प्रदान करना जिनके लिए वह अवधारित है।'

इस सन्दर्भ में 15 जून, 2007 को महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति एवं विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलाध्यक्ष महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा किया गया।

विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा केन्द्र का उद्देश्य हिन्दी भाषा के माध्यम से ज्ञान के नवीनतम अनुशासनों की शिक्षा समाज के हर तबके––विशेषतौर पर समाज के हाशिए पर रह रहे शिक्षा से वंचित लोगों––तक पहुँचाना है। यह केन्द्र हिन्दी भाषा को आधार बनाकर प्रबन्धन, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुवाद आदि अनुशासनों में शिक्षण, मौलिक सोच एवं लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु कटिबद्ध है। यह केन्द्र स्त्री–अध्ययन, अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन जैसे नवीनतम अनुशासनों को व्यापक समाज तक पहुँचाने का प्रयास करेगा ताकि विश्वशान्ति एवं समता जैसे मूल्यों को व्यावहारिक तौर पर सिद्ध किया जा सके। हिन्दी में मौलिक–वैकल्पिक सोच एवं शोध के लिए प्रतिबद्ध इस विश्वविद्यालय का दूर शिक्षा केन्द्र यह प्रयास करेगा कि एक ओर दूर शिक्षा कार्यक्रम शोध/अनुसन्धान द्वारा हिन्दी एवं ज्ञान के अनुशासनों में मौलिक सृजन करे, साथ ही, दूसरी ओर हिन्दी भाषा के माध्यम से रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। देश में उच्च शिक्षा के लगातार महंगे एवं आमजन की पहुँच से दूर होने के इस दौर में दूर शिक्षा की भूमिका निर्विवाद एवं महत्वपूर्ण है। अतः यह केन्द्र उन सभी व्यक्तियों के लिए शिक्षा प्राप्ति का एक बेहतर अवसर प्रदान कर सकेगा जो किसी कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। आशा है कि इसी राह पर चलते हुए यह केन्द्र अपने ध्येय 'शिक्षा जन–जन के द्वार' को चरितार्थ कर सकेगा।

उद्देश्य

- ★ हिन्दी में मौलिक सोच एवं लेखन तथा दूर शिक्षा कार्यक्रमों––इन दोनों उद्देश्यों का समन्वय कर पाठ्यक्रम विकसित करना।
- ★ परिवर्तनशील समाज के सम्मुख आने वाली नयी चुनौतियों के रचनात्मक प्रत्युत्तर के लिए समाज को शैक्षिक स्तर पर समर्थ बनाना।
- ★ हिन्दी भाषा के माध्यम से दूर शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन।
- ★ समाज के हर तबके––विशेष तौर पर शिक्षा से वंचित तबके––की उच्च शिक्षा तक पहुँच आसान बनाना।
- ★ ज्ञान के नवीनतम अनुशासनों की हिन्दी में मौलिक प्रस्तुति करना।
- ★ गुणवत्तापूर्ण स्व–अध्ययन सामग्री द्वारा हिन्दी का प्रचार–प्रसार।
- ★ समाज की आवश्यकतानुसार रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों का संचालन।
- ★ दूर शिक्षा पाठ्यक्रमों एवं नवीनतम तकनीकों का समन्वय कर शिक्षा को आम जनता तक सुलभ बनाना।

★ देश–विदेश में हिन्दी के माध्यम से दूर शिक्षा कार्यक्रमों के क्षेत्र में स्वयं को एक आदर्श संस्था के बतौर स्थापित करना।

★ हिन्दी भाषा के माध्यम से ऐसी शिक्षा प्रदान करना जो देश के लोकतांत्रिक स्वरूप एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करे।

★ हिन्दीतर क्षेत्रों में विशेष रूप से दूर शिक्षा कार्यक्रमों का सफल संचालन करना।

संचालित पाठ्यक्रम (2007–08)

1. अनुवाद में स्नातकोत्तर डिलोमा
2. पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
3. हिन्दी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा
4. स्त्री सशक्तिकरण एवं विकास में डिप्लोमा
5. बी.ए.

(सभी पाठ्यक्रम दूर शिक्षा परिषद, नयी दिल्ली से मान्यता प्राप्त हैं)

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(Post Graduate Diploma in Translation)

कार्यक्रम कोड––पी.जी.डी.टी.

पात्रता––स्नातक उपाधि या समकक्ष

आयु––कोई सीमा नहीं

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि––1 वर्ष

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि–4 वर्ष

पाठ्यक्रम शुल्क–1900/–रुपए

माध्यम–हिन्दी

पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(Post Graduate Diploma in Journalism and Mass Communication)

कार्यक्रम कोड––पी.जी.डी.जे.एम.सी.

पात्रता––स्नातक उपाधि या समकक्ष तथा जनसंचार माध्यम/सम्प्रेषण के क्षेत्र में दो वर्षीय कार्यानुभव

आयु––कोई सीमा नहीं

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि––1 वर्ष

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि––4 वर्ष

पाठ्यक्रम शुल्क––2300/–रुपए

माध्यम––हिन्दी/अंग्रेजी

हिन्दी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा

(Diploma in Creavive Writing In Hindi)

कार्यक्रम कोड––डी.सी.डब्ल्यू.एच.

पात्रता––10+2 या समकक्ष

आयु––कोई सीमा नहीं

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि––1 वर्ष

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि––4 वर्ष

पाठ्यक्रम शुल्क––1900/–रुपए

माध्यम––हिन्दी

स्त्री सशक्तिकरण एवं विकास में डिप्लोमा

(Diploma in Women's Empowerment and Development)

कार्यक्रम कोड––डी.डब्ल्यू.ई.डी.

पात्रता––10+2 या समकक्ष

आयु––कोई सीमा नहीं

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि––1 वर्ष

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि––4 वर्ष

पाठ्यक्रम शुल्क––1900/–रुपए

माध्यम––हिन्दी

बी.ए.

B.A.

कार्यक्रम कोड––बी.ए.

पात्रता––10+2 या समकक्ष

आयु––कोई सीमा नहीं

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि––3 वर्ष

पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि––6 वर्ष

पाठ्यक्रम शुल्क––1300/–रुपए प्रति वर्ष

माध्यम––हिन्दी

प्रस्तावित कार्यक्रम (2008–09)

अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन में एम.ए., एम.फिल.
स्त्री अध्ययन में एम.ए., एम.फिल.
हिन्दी में एम.ए., एम.फिल.
एम.बी.ए.–हिन्दी माध्यम
जनसंचार एवं पत्रकारिता में एम.फिल.
जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
अनुवाद प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
स्त्री अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
गांधी विचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
बी.एड.

प्रस्तावित क्षेत्रीय केन्द्र : दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ, अहमदाबाद और चेन्नई।
प्रस्तावित अध्ययन केन्द्र : गढ़ाकोला (उन्नाव), अल्मोड़ा, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुअनन्तपुरम तथा प्रत्येक राज्य की राजधानी एवं प्रमुख शहरों में होंगे।

(संचालित एवं प्रस्तावित पाठ्यक्रमों हेतु प्रवेश सूचना मई–जून 2008 में जारी होगी।)

विश्वविद्यालय के लिए और विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों और पत्रिकाओं की सूची

पुस्तक/पत्रिका

पुस्तक–वार्ता', प्रभारी सम्पादकः श्री राकेश श्रीमाल (*द्विमासिक पत्रिका*) [अंक 1–19 प्रकाशित]		10/–
'Hindi' (अंग्रेजी में) [अंक Vol. 1.1 से Vol. 3.1 प्रकाशित] –*फिलहाल प्रकाशन स्थगित*		
बहुवचन, प्रभारी सम्पादकः डॉ. रामानुज अस्थाना (*त्रैमासिक पत्रिका*) [अंक 1–17 प्रकाशित]		50/–
The First Published Anthology of Hindi Poets (Editor-Imre Bangha, Rainbow Publication, Delhi] 2000)	185	225/–
अँधेरे में (द्विभाषीय, अंग्रेजी अनुवाद–कृष्ण बलदेव वैद, रेनबो प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	116	150/–
अज्ञेय संचयिता (सम्पादक– नन्दकिशोर आचार्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	496	395/–
स्वच्छन्द (सम्पादक–अशोक वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2000)	172	175/–
कविता का शुक्लपक्ष (सम्पादक–बच्चन सिंह/अवधेश प्रधान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	355	325/–
मैथिलीशरण गुप्त संचयिता (नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	303	275/–
भवानी प्रसाद मिश्र संचयिता (सम्पादक– प्रभात त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, 2002)	450	450/–
अन्तर्लोक (अध्यात्म सम्बन्धी कविताओं का संकलन, सम्पादक– नंदकिशोर आचार्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	304	250/–
रघुवीर सहाय संचयिता (सम्पादक–कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन, 2002)	274	225/–
श्रीकांत वर्मा संचयिता (सम्पादक–उदयन वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	399	325/–
नामवर सिंह संचयिता (सम्पादक–नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	427	350/–
निराला संचयिता (सम्पादक–रमेशचन्द्र शाह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	413	395/–
राकेश समग्र (सम्पादक–नन्दकिशोर नवल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	431	395/–
जीवन के बीचोंबीच (रूजेविच की कविताओं का हिन्दी–पोलिश संस्करण, सम्पादक–रेनाता चेकाल्स्का, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	275	350/–
पन्त–सहचर (सम्पादक–अशोक वाजपेयी, अपूर्वानन्द, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	342	395/–
हजारीप्रसाद द्विवेदी (राधावल्लभ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	436	400/–
अन्तःकरण का आयतन (ज़्बीग्न्येव हेर्बेते की कविताओं का हिन्दी–पोलिश संस्करण, सम्पादक–अशोक वाजपेयी, रेनाता चकाल्स्का, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	293	395/–
महादेवी वर्मा संचयिता (सम्पादक–डॉ. निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	434	360
रचनावली के बहानेः रघुवीर सहाय (मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन, 2002)	112	150/–
त्रिलोचन संचयिता (ध्रुव शुक्ल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	536	375/–
स्मृति, मति और प्रज्ञाः धर्मपाल से उदयन वाजपेयी की बातचीत (वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	125	125/–
रामचन्द्र शुक्ल संचयिता (सम्पादक–डा.रामचन्द्र तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	460	500/–
हिन्दी प्रयोग एक शैक्षिक व्याकरण (सम्पादक–पी.सी.जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	370	350/–
उर्दू साहित्य का देवनागरी में लिपिकरण–कुछ समस्याएँ, कुछ सुझाव (सम्पादक– वागीश शुक्ल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	110	195/–

छन्द–छन्द पर कुकुम (डा. वागीश शुक्ल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	245	300/–
द्विजदेव ग्रन्थावली (सम्पादक–आचार्य विद्यानिवास मिश्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2000)	194	200/–
कवि नायक अज्ञेय (सुश्री इला डालमिया कोइराला, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2002)		100/–
कविता नदी (सम्पादक–प्रयाग शुक्ल, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2001)	404	400/–
जैनेन्द्र कुमार संचयिता (सम्पादक–ज्योतिश जोशी, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002)	528	425/–
पुस्तक और मैं (सम्पादक– राकेश श्रीमाल, मेधा बुक्स पब्लिकेशन, 2002)	64	20/–
फणीश्वरनाथ रेणु संचयिता (सुवास कुमार, मेधा बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, 2002)	693	590/–
प्रेमचन्द की कहानियों का समानान्तर हिन्दी उर्दू संस्करण : समक्ष (संपादक– आलोक राय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002)	231	375/–
हिन्दी की जनपदीय कविता (सम्पादक–विद्यानिवास मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002)	727	600/–
पूज्य पिता के सहज सत्य पर (सम्पादक–ध्रुव शुक्ल, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2002)	80	90/–
सूचीपत्रक, तादेऊश रूज़ेविच का पोलिश नाटक (अनुवादकः नीलाभ, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, 2003)	72	50/–
हिन्दी साहित्यशास्त्र (नन्दकिशोर नवल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2003)	280	300/–
हिन्दी साहित्य का मौखिक इतिहास—4 खण्डों में (सम्पादक–नीलाभ, चारों खण्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन, वितरक–शिल्पायन, दिल्ली, 2004)		1000/–
मीरा संचयन (नन्द चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली)		175/–
रोशनी की खिड़कियाँ (सुरेश सलिल, मेधा बुक्स प्रकाशन, दिल्ली)		450/–
निर्मल विमर्श (प्रधान सम्पादक प्रो. गोपीनाथन, प्रभारी सम्पादक डॉ. रामानुज अस्थाना)		200/–
तमिल शैव सुन्दर्र (सम्पादक डॉ. एन. सुन्दरम, डॉ. आर. अस्थाना)		400/–
पुस्तक और मैं (सम्पादक राकेश श्रीमाल)		60/–
विश्वभाषा हिन्दी की अस्मिता : स्वप्न और यथार्थ (प्रो. जी. गोपीनाथन)		60/–

छवि–संग्रह :	**मूल्य**
निर्मल वर्मा	150/–
कुँवर नारायण	150/–
कृष्णा सोबती	150/–
विष्णु प्रभाकर	150/–
भीष्म साहनी	150/–
नेमिचन्द्र जैन	150/–
मनोहर श्याम जोशी	150/–
नामवर सिंह	150/–
केदारनाथ सिंह	150/–
त्रिलोचन	150/–
कविता शती (प्रख्यात 36 कवियों द्वारा कविता–पाठ का वीडियो सी.डी.) 6 VCD का सेट	1500/–

हिन्दी भाषा और साहित्य की सर्वथा अभिवृद्धि और विकास

हिन्दी में आधुनिक विमर्शों और अन्तरानुशासनिक विषयों का अध्ययन एवं शोध

हिन्दी को अधिक प्रकार्यात्मक दक्षता और प्रमुख अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिलाने

हिन्दी को समस्त अध्ययन क्षेत्रों– मानविकी, समाजविज्ञान, प्रकृति विज्ञान, प्रबन्धन, अभियान्त्रिकी,

विधि, चिकित्सा, आदि– की माध्यम भाषा के रूप में सक्षम बनाने

के लिए स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय

एक विकल्प

गतिशील, खुला और शैक्षणिक स्थापत्य में काफ़ी लचीला

एक अवधारणा

सबके साथ मैत्री, अपनी समेत सबकी संस्कृतियों का सम्मान

एक अभिप्राय

दूसरों के रुख के लिए जगह, अपने क्षेत्र से बाहर के क्षेत्रों के लिए पहुँच–रास्तों का जाल

हिन्दी

सृजन और विवेक के साथ–साथ ज्ञान, बुद्धि और जिज्ञासा की भाषा

भारत और संसार की बहुभाषिकता के लिए प्रतिबद्ध

सेवाग्राम से कुछ दूर वर्धा में एक नया आश्रम

साहित्य, भाषा, संस्कृति और अनुवाद के चार विद्यापीठ

ज्ञान,शान्ति,मैत्री

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

पोस्ट बॉक्स सं. 16, पंचटीला, उमरी, आर्वी रोड, वर्धा–442 001 (महाराष्ट्र)

फोन : (07152) 251661, फोन–फैक्स : (07152) 230 903

ई–मेल : info@hindivishwa.org , hindiuni_wda@sancharnet.in

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

ज्ञान शान्ति मैत्री

painting : Akhilesh
Design and layout : Rakesh Shreemal
Production : Pu